

Resource: मुख्य शब्द (Biblica)

Biblica Study Notes (Key Terms) © 2023 Biblica Inc. Released under CC BY-SA 4.0 license. Biblica Study Notes has been adapted in the following languages: Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文) from Biblica Study Notes © 2023 Biblica Inc. Released under CC BY-SA 4.0 license by Mission Mutual.

मुख्य शब्द (Biblica)

स

संख्याएँ

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में संख्याओं के विशेष अर्थ हैं। उनका हमेशा उल्लेखित सटीक संख्या से मतलब नहीं होता है। वे किसी आध्यात्मिक चीज़ के संकेत हैं।

संसार

बाइबल में 'संसार' शब्द के दो अर्थ हैं। पहला अर्थ वह स्थान है जिसे परमेश्वर ने पौधों, जानवरों और मनुष्यों के रहने के लिए बनाया। दूसरा अर्थ बुराई के बारे में बात करने का एक तरीका है। परमेश्वर ने जो संसार बनाया वह अच्छा है, बुरा नहीं। फिर भी शैतान दुष्ट है और उसके पास संसार में बुरे काम करने की शक्ति है। बहुत से लोग उसके बुरे तरीकों का अनुसरण करना चुनते हैं। नये नियम के लेखकों का यही मतलब था जब उन्होंने दुनिया के तौर-तरीकों के बारे में लिखा। उन्होंने यह भी लिखा कि यीशु ने संसार पर युद्ध जीता। इसका मतलब यह है कि यीशु ने पाप, मृत्यु और सभी बुरे आध्यात्मिक प्राणियों पर विजय प्राप्त की है। यीशु ने कष्ट सहकर, क्रूस पर मरकर और मृतकों में से जीवित होकर यह युद्ध जीता। इस कारण से, यीशु के अनुयायी पवित्र आत्मा की शक्ति के अधीन रहते हैं। वे पाप, मृत्यु और बुराई की शक्ति के गुलाम बनकर नहीं रहते। नए नियम के लेखकों का इस बुरी दुनिया से मुक्त होने का यही मतलब था।

सद्वक्तियों

यरूशलेम में सबसे अधिक अधिकार रखने वाले यहूदी धर्म के अगुवों का समूह। यह नए नियम के समय की बात है। वे मंदिर के प्रभारी थे और रोमी शासकों के साथ मिलकर काम करते थे। वे स्वर्गदूतों या इस बात पर विश्वास नहीं करते थे कि परमेश्वर लोगों को मरे हुएों में से जिलाता है। वे यह नहीं मानते थे कि यीशु ही वह मसीहा है जिसे भेजने का वादा परमेश्वर ने किया था। ज्यादातर सद्वक्तियों ने यीशु और उसकी शिक्षाओं का विरोध किया।

सदोम और गमोरा

कनान में दो शहर। वहाँ रहने वाले लोग बुरे काम करने के लिए जाने जाते थे। अब्राहम का भतीजा लूत सदोम में रहता था। परमेश्वर ने सदोम और गमोरा को नष्ट कर दिया लेकिन लूत को बचा लिया। परमेश्वर ने इन शहरों को उनकी बुरी आदतों के कारण नष्ट कर दिया।

सपने

एक तरीका जिससे परमेश्वर खुद को और अपनी योजनाओं को लोगों के सामने प्रकट करते हैं। कभी-कभी परमेश्वर का संदेश एक सपने के माध्यम से लोगों के लिए बहुत स्पष्ट होता है। अन्य समय में यह उनके लिए स्पष्ट नहीं हो सकता है। परमेश्वर कुछ लोगों को दूसरों के सपनों को समझने की क्षमता देते हैं। वे दूसरों को परमेश्वर का संदेश समझने में मदद करते हैं। सभी सपने परमेश्वर के संदेश नहीं होते। लोग परमेश्वर के सपनों को साकार नहीं करते। वे परमेश्वर का वरदान होते हैं।

सफेद वस्त्र पहने हुए

जब लोग परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर रहे होते हैं, तो इसका वर्णन करने का एक तरीका। बाइबिल में, सफेद रंग उन चीजों का चिन्ह है जिन्हें शुद्ध माना जाता है। लोग तब शुद्ध होते हैं जब वे वही करते हैं जो परमेश्वर चाहता है। सफेद वस्त्र इसका चिन्ह है। प्रकाशितवाक्य में, लोगों के वस्त्र मेमने के रक्त में धोकर सफेद हो जाते हैं। इसका अर्थ है कि लोग यीशु पर भरोसा करते हैं कि वह उन्हें पाप की शक्ति से बचाएंगे।

सबसे पवित्र कमरा

वह कमरा जहाँ वाचा का सन्दूक रखा गया था (वाचा का सन्दूक)। यह कमरा पहले पवित्र तम्बू में और बाद में मन्दिर में था। परमेश्वर वहाँ इस्राएलियों के बीच उपस्थित था। एक मोटा पर्दा इसे तंबू या मंदिर के बाकी हिस्से से अलग करता था। पर्दा इस बात का संकेत था कि मनुष्य किस प्रकार परमेश्वर से अलग हो गए हैं। यदि लोग परदे के पीछे चले तो

वे मर जायेंगे। केवल महायाजक ही परम पवित्र कक्ष में प्रवेश कर सकता था। वह साल में एक बार ऐसा करता था। जब यीशु की मृत्यु हुई, तो परम पवित्र कक्ष का पर्दा खुल गया। यह एक संकेत था कि यीशु की मृत्यु ने लोगों को फिर से परमेश्वर के करीब ला दिया।

सबसे बड़े बेटे के अधिकार

परिवार की संपत्ति का अधिकार और हिस्सा सबसे बड़े बेटे को दिया जाता था। यह तब होता था जब परिवार के पिता की मृत्यु हो जाता थी। सबसे बड़े बेटे को अन्य बेटों की तुलना में दो गुना अधिक संपत्ति मिलती थी। उसके पास बाकी परिवार पर उसी तरह का अधिकार होता था, जैसा पिता का था। वह परिवार का अगुवा होने के लिए जिम्मेदार था।

सब्त दिवस

इस्राएलियों और यहूदियों के लिए सप्ताह का सातवां दिन। यह एक पवित्र दिन था जब वे आराम करते थे और काम नहीं करते थे। इसमें उनके पशु, उनके सेवक और उनके साथ रहने वाले बाहरी लोग भी शामिल थे। यह दिन इस बात का सम्मान करने के लिए था कि परमेश्वर ने दुनिया बनाने के बाद आराम किया। यह उस आराम का भी सम्मान करता था जो परमेश्वर ने मिस्र में गुलामी से मुक्त करने के बाद इस्राएलियों से वादा किया था। सब्त का दिन सीने पहाड़ पर इस्राएलियों के साथ परमेश्वर की वाचा का प्रतीक था। यह दिन इस बात की याद दिलाता था कि परमेश्वर भला हैं और अपने लोगों की जरूरतें पूरी करता हैं। बाद में, यहूदी धार्मिक अगुएँ लोगो ने सब्त के दिन क्या करने की अनुमति थी, इसके बारे में कई नियम बनाए। ये नियम हमेशा लोगों को परमेश्वर का सम्मान करने में मदद नहीं करते थे। यीशु ने लोगों को सिखाया कि सब्त के दिन परमेश्वर का सम्मान कैसे करें। भले ही अगुएँ लोगो ने उनका विरोध किया, उन्होंने सब्त के दिन चमत्कार किए।

सभी जातियों को आशीर्वाद दें

परमेश्वर ने वादा किया कि अब्राहम और उनके परिवार के माध्यम से पृथ्वी पर सभी राष्ट्र आशीष पाएँगे। परमेश्वर ने यह वादा इसहाक और याकूब से भी दोहराया। यह वादा भजन संहिता 72 और जकर्याह अध्याय 8 में भी दोहराया गया। यह वादा कई तरीकों से पूरा हुआ। एक तरीका था इस्राएलियों के साथ परमेश्वर की वाचा कि व्यवस्था के माध्यम से। इस्राएलियों को केवल परमेश्वर की उपासना करनी थी और सीने पर्वत कि वाचा का पालन करना था। इससे अन्य राष्ट्रों को पता चलता कि परमेश्वर के लोग कितने बुद्धिमान और समझदार थे।

इससे अन्य राष्ट्रों को पता चलता कि परमेश्वर अपने लोगों के निकट थे और उनसे प्रेम करते थे। इससे अन्य राष्ट्रों को सच्चे परमेश्वर की उपासना और आज्ञा का पालन करने की इच्छा होती। दूसरा तरीका यीशु के माध्यम से था। यीशु अब्राहम के परिवार से थे। पृथ्वी पर सभी लोग यीशु में विश्वास करके परमेश्वर के साथ सही हो सकते हैं। इस प्रकार परमेश्वर का वादा कि सभी राष्ट्र आशीर्वादित होंगे, पूरी तरह से पूरा होता है।

समुद्र

बाइबल में कई कहानियों में समुद्र को एक ऐसी चीज़ के रूप में बताया गया है जिससे डरना चाहिए। यह ऐसा कुछ था जिससे लोगों को बचाने के लिए परमेश्वर की आवश्यकता थी। इसमें इस्राएलियों का लाल समुद्र पार करना भी शामिल था। इसमें योना का वह दृश्य भी शामिल है जब उसे समुद्र में फेंक दिया गया था। इसमें यीशु का वह दृश्य भी शामिल है जब उसने समुद्र में आए तूफान को शांत किया था। इसमें प्रकाशितवाक्य में प्रस्तुत किया गया यूहन्ना का दर्शन भी शामिल था जिसमें समुद्र से निकलने वाले पशु का वर्णन था।

समृद्धि सुसमाचार

एक शिक्षा जो यीशु के बारे में अच्छी खबर के खिलाफ जाती है। यह सिखाती है कि परमेश्वर पृथ्वी पर सभी समस्याओं और कष्टों से लोगों को बचाते हैं। यह सिखाती है कि परमेश्वर उन सभी को धन देते हैं जो यीशु में विश्वास करते हैं और उन पर विश्वास रखते हैं। यह सिखाती है कि उनके पास हमेशा उनकी जरूरत से ज्यादा होगा। यह भी सिखाती है कि उनके शरीर हमेशा स्वस्थ रहेंगे। यह सिखाती है कि उनके पास ये सभी चीज़ें तब तक होंगी जब तक वे पृथ्वी पर जीवित हैं। यीशु के बारे में जो सच्ची सुसमाचार है वह इन चीज़ों को नहीं सिखाती। सच्चाई यह है कि यीशु लोगों को पाप, मृत्यु और बुराई की शक्ति से बचाते हैं। यह उद्धार तब शुरू होता है जब लोग पृथ्वी पर जीवित होते हैं। यह तब पूरा होगा जब यीशु वापस आएंगे और नई सृष्टि में राजा के रूप में शासन करेंगे। यीशु अपने अनुयायियों के लिए एक उदाहरण हैं कि कैसे जीना है। उनका उदाहरण विश्वासियों को सिखाता है कि दूसरों की सेवा कैसे करें और कष्टों का सामना कैसे करें।

सरदीस

आसिया के रोम क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शहर। वहाँ देवी अरतिमिस का एक मंदिर था।

सलोफाद की बेटियाँ

महला, नोवा, होग्ला, मिल्का और तिसा मनश्शे के गोत्र से थीं। उनके पिता सलोफाद की मृत्यु रेगिस्तान में हो गई थी जब इस्राएलियों ने कनान में प्रवेश करने से इनकार कर दिया था। उनकी बेटियों को सलोफाद के परिवार की भूमि मिली क्योंकि उनके कोई बेटे नहीं थे। उन्होंने अपने परिवार समूह में चचेरे भाइयों से शादी की। इस तरह उनकी भूमि हमेशा मनश्शे के गोत्र की रहेगी।

सही

यूनानी भाषा में सही के लिए शब्द का अर्थ पूर्ण या समाप्त होता है। इसका मतलब है कि कुछ भी गायब नहीं है और कुछ पूर्ण विकास तक पहुंच गया है।

साइप्रस

भूमध्य सागर में सीरिया के पश्चिम और तुर्की के दक्षिण में एक बड़ा द्वीप। पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं ने साइप्रस का उल्लेख किया। यह द्वीप पौलुस की पहली यात्रा में सुसमाचार सुनाने के लिए महत्वपूर्ण था। विश्वासियों में बरनबास और मनासोन साइप्रस से थे।

सात

बाइबिल में उन चीजों के बारे में बात करने के लिए उपयोग की जाने वाली संख्या जो पूर्णता की बात करती हैं। यह दिखाती है कि चीजें समाप्त और परिपूर्ण हैं।

सात के समूह

युहन्ना के दर्शनों में, उन्होंने देखा कि परमेश्वर का न्याय सात चीजों के समूहों में हुआ। वहाँ सात मुहरें, सात तुरहियाँ और सात कटोरे थे। प्रत्येक समूह के अंत में बिजली, गरज और भूकंप होता था। बाइबल में, सात संख्या पूर्णता का प्रतीक है।

सामरिया

उत्तरी इस्राएल राज्य की राजधानी। ओम्री ने सामरिया को उत्तरी राज्य की सरकार का केंद्र बनाया। अहाब ने इसे उत्तरी राज्य की पूजा प्रथाओं का केंद्र बनाया। 722 ईसा पूर्व में अशूरियों ने शहर और उसके आसपास के क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया। वे अन्य लोगों को वहां रहने के लिए ले आये। ये लोग सामरिया में बचे हुए इस्राएलीयों के साथ मिल गए। उनके

बच्चे सामरी कहलाए। रोमियों के समय में, सामरिया इस्राएल का एक क्षेत्र था। यह उत्तर में गलील और दक्षिण में यहूदिया के बीच था। यीशु के समय में, सामरी लोग अब्राहम के वंश से होने का दावा करते थे। यहूदी और सामरी आमतौर पर एक-दूसरे के साथ दुश्मन की तरह व्यवहार करते थे।

सारा

मेसोपोटामिया की एक महिला जो अब्राहम की पत्नी थी। वह तेरह की पुत्री थी, लेकिन अब्राहम से भिन्न माँ की संतान थी। परमेश्वर ने उत्पत्ति के अध्याय 17 में सारै का नाम बदलकर सारा कर दिया। इब्रानी भाषा में, सारै और सारा दोनों का अर्थ राजकुमारी या कुलीन महिला होता है। कई वर्षों तक वह बच्चों को जन्म देने में असमर्थ रही। परमेश्वर ने उससे वादा किया था कि वह एक बेटा को जन्म देगी। जब वह बहुत बूढ़ी हो गयी, तो उसने इसहाक को जन्म दिया।

सीनै पहाड़

मिस्र के बाहर एक पहाड़। इसे होरेब पहाड़ भी कहा जाता था। परमेश्वर ने मूसा को उस झाड़ी में दर्शन दिया जो जलती हुई देख रही थी। इस्राएल के लोगों के मिस्र छोड़ने के बाद, परमेश्वर की फिर से मूसा से वहाँ मुलाकात हुई। यहीं पर परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के साथ अपनी वाचा स्थापित की।

सीनै पहाड़ की वाचा

परमेश्वर ने दुनिया को बचाने की अपनी योजना में इस्राएल के लोगों के माध्यम से काम करना चुना। परमेश्वर ने याकूब के परिवार के साथ एक वाचा बाँधकर इसे दिखाया। वाचा उन लोगों के साथ थी जिन्हें परमेश्वर ने मिस्र में दास होने से बचाया था। यह उन सभी इस्राएलियों के साथ भी था जो उनके बाद पैदा होंगे। लोगों को दस आज्ञाओं और अन्य नियमों का पालन करना था जो परमेश्वर ने मूसा को दिए थे। जब वे कनान में रहेंगे तो परमेश्वर उन्हें स्वास्थ्य, सुरक्षा, शांति और ढेर सारे बच्चे देंगे। वह उन्हें खाने-पीने के लिए काफी कुछ देता था। वह उन्हें याजकों का राज्य और पवित्र राष्ट्र बना देगा। खतना और सब्त का दिन वाचा के चिन्ह थे। परमेश्वर ने यह वाचा अपने लोगों के साथ सीनै पर्वत पर बाँधी। मूसा वाचा के मध्यस्थ थे।

सीरिया का अन्ताकिया

सिरिया के रोमी क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण यूनानी शहर। दुनिया भर से यात्री अन्ताकिया से गुजरते थे। यह अब तुर्की कहलाने वाले देश में और अब सिरिया कहलाने वाले देश के करीब था। वहाँ की कलीसिया ने यीशु के बारे में संदेश फैलाने के लिए पौलुस की सहायता की थी।

सीलास

यरूशलेम में विश्वासियों के बीच एक अगुआ। उन्होंने पौलुस, बरनबास और पतरस के साथ काम किया। वह एक नबी और एक रोमी नागरिक थे। उन्होंने यरूशलेम कलीसिया से गैर-यहूदी कलीसियों तक एक महत्वपूर्ण पत्र पहुंचाने में मदद की। उन्होंने पौलुस और पतरस को कलीसियों को पत्र लिखने में भी मदद की।

सीहोन और ओग

दो एमोरी राजा जो यरदन नदी के पूर्व में रहते थे। सीहोन हेशबोन का राजा था और ओग बाशान का राजा था। इस्राएलियों ने शांति से उनके क्षेत्रों से गुजरने की अनुमति मांगी। सीहोन और ओग ने उन पर हमला किया लेकिन इस्राएली युद्ध जीत गए। कुछ इस्राएली जनजातियों ने उन क्षेत्रों में रहने और बसने का निर्णय लिया।

सुरक्षित शहर

छह शहर जहाँ लेवियों रहते थे। तीन यरदन नदी के पूर्वी किनारे पर थे। तीन पश्चिमी किनारे पर थे। जो लोग गलती से किसी को मार देते थे, वे वहाँ जा सकते थे। वे सुरक्षित रहते और मृत व्यक्ति के निकटतम पुरुष रिश्तेदार द्वारा मारे जाने से बच जाते थे। वे वहाँ तब तक रह सकते थे जब तक प्रधान याजक की मृत्यु नहीं हो जाती। फिर वे वापस वहाँ जा सकते थे जहाँ वे पहले रहते थे।

सुलैमान

दाऊद और बतशेबा का पुत्र जो इस्राएल का राजा बना। परमेश्वर ने उसे यदीदियाह नाम दिया। इब्रानी भाषा में यदीदियाह का मतलब है प्रभु द्वारा प्रिय। इस नाम ने दिखाया कि परमेश्वर ने सुलैमान को दाऊद के बाद राजा बनने के लिए चुना था। जब यरूशलेम में मंदिर बनाया गया था, तब सुलैमान राजा थे। वह बहुत बुद्धिमान और बहुत धनी थे। उन्होंने कई नीतिवचन और गीत लिखे। अपने शासन के बाद

के समय में सुलैमान परमेश्वर के प्रति वफादार रहना बंद कर दिया। इससे इस्राएल राष्ट्र दो राज्यों में विभाजित हो गया।

सुसमाचार

यूनानी भाषा का एक शब्द जिसका अर्थ है शुभ समाचार। यह बाइबिल में यीशु मसीह के जीवन और कार्य के बारे में पुस्तकों का नाम भी है। नए नियम में चार सुसमाचार हैं: मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना। सुसमाचार यीशु के बारे में शुभ समाचार बताते हैं। लेखकों ने सुसमाचारों को गवाहों के अभिलेख और कहानियों पर आधारित किया। गवाहों ने यीशु के साथ जीवन बिताया था और उनके साथ काम किया था। (शुभ समाचार)

सुसमाचार

यीशु के बारे में संदेश। यूनानी भाषा में पूरे संदेश को सुसमाचार कहा जाता है। (सुसमाचार) यह वह संदेश है कि परमेश्वर लोगों को पाप और मृत्यु की शक्ति से बचाता है। इसका मतलब है कि लोग अपने सृष्टिकर्ता की पूरी तरह से उपासना कर सकते हैं। वे उसके साथ और दूसरों के साथ शांति से रह सकते हैं। यह इसलिए हो सकता है क्योंकि यीशु ने सभी मनुष्यों को बचाने के लिए अपना जीवन दिया। उन्होंने लोगों को बुराई कि गुलामी से मुक्त करने के लिए बलिदान के रूप में अपनी जान दी। फिर परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से उठाया। यीशु यहूदी मसीहा हैं जिन्हें परमेश्वर ने भेजने का वादा किया था। वह उन सभी को परमेश्वर का अनंत जीवन और पुनरुत्थान की शक्ति देते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं।

सृष्टि

सब कुछ जो अस्तित्व में है, परमेश्वर द्वारा बनाया गया था। इसमें भूमि, समुद्र, आकाश और उनमें सब कुछ शामिल है। इसमें स्वर्गीय दुनिया में सब कुछ भी शामिल है। परमेश्वर ने जो कुछ भी बनाया वह अच्छा था जब उन्होंने इसे बनाया। सृष्टि मानव जाति के पापों के कारण पीड़ित होती है। परमेश्वर नई सृष्टि में इसे पाप के प्रभावों से मुक्त करेंगे। (नया सृजन)।

सेवक

इस्राएली अन्य इस्राएलियों के लिए सेवक के रूप में काम कर सकते थे। यह उन्हें उनके कर्ज चुकाने में मदद करने के लिए था। छह साल काम करने के बाद, उन्हें स्वतंत्र होने का विकल्प दिया गया था। यदि उन्होंने स्वतंत्र होने का विकल्प चुना तो उन्हें भोजन और पशुधन दिया जाता था। सेवक यह भी चुन सकता था कि वह अपने पूरे जीवन के लिए उसी

परिवार के लिए काम करता रहे। सेवकों के साथ बुरा व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए या उन्हें दास नहीं माना जाना चाहिए। ऐसा इसलिए था क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें मिस्र में दासत्व से मुक्त कर दिया था। उन्हें फिर कभी दास नहीं बनना था। फिर से दास बनना वाचा के अभिशापों में से एक था।

सोने की वेदी

युहन्ना के परमेश्वर के सिंहासन के दर्शन में एक सुनहरी वेदी थी। इससे पता चला कि सिंहासन वाला क्षेत्र भी एक मंदिर था। यह वही नमूना था जिसका उपयोग इस्राएलियों और यहूदियों ने पवित्र तंबू और मंदिर के लिए किया था (इब्रानियों 8:1-5)। (वेदी)

सोर और सीदोन

भूमध्य सागर के तट पर स्थित शहर अब लबानोन कहलाने वाले देश में हैं। सबसे पहले वहाँ फिनिशियन लोग रहते थे। बाद में इन शहरों पर कई अलग-अलग सरकारों का नियंत्रण रहा। जब इस्राएली कनान में आए, तो उन्होंने इन शहरों पर कभी नियंत्रण नहीं किया। सोर भी एक मजबूत किला था। इस्राएल के कुछ राजाओं के शासनकाल के दौरान सोर और इस्राएल के बीच शांति थी। सोर और सीदोन के लोग झूठे देवताओं की उपासना करते थे और बुरे कामों के लिए जाने जाते थे।